सत्यसमाज के छठे वर्ष की उपहार पूर्ति (सन् ४७ जनवरी—

मुसलिम भाइयों से

(मुसलिम भाइयों के नाम लिखी गई, प्यार और सच्चाई से भरी हुई चिट्ठी, जिसपर अमल करने से मुसलमान और गैरमुसलमान सब का भला है। जिसमें मेल मिलाप का ऐसा रास्ता बताया गया है जिसमें न तो किसी की तौहीन हो न किसी का मजहब डूबे और मेल मुहब्बत बढ़ने से मुल्क में अमन चैन छाजाय)

लेखक

सत्यसमाज के संस्थापक (बानो) सत्याश्रम वर्धा के कुलगुरु

स्वामी सत्यभक्त

प्रकाशक:—मन्त्री सत्याश्रम वर्धा (सी. पी.)

यानवरी ११९४७ इतिहास संवत्

मूल्य तीन आना | पहिली बार | मुफ्त बांटने के लिये १४) सैकड़ा

सत्यभक्त साहित्य

राजनैतिक सामाजिक धार्मिक कौटुम्बिक, वैज्ञानिक, आध्यात्मिक साहित्यक सभी समस्याओं को सुलझानेवाला सब तरह का पठनीय साहित्य, सत्यभक्त साहित्य है। जिसमें स्वामी सत्यभक्तजी के जीवनभर के अनुभवों और तर्कों का निचोड़ विविध रूपों में परोसा गया है।

सत्यामृत (मानवधर्म शास्त्र)

१ ,, दृष्टिकांड १॥ रु.
२ ,, आचारकांड २ रु.
३ ,, व्यवहारकांड ५ रु.
४ नया संसार (भ्रमण वृत्तांत १।
५ गागरमें सागर (लघुकथा) ॥।
६ ,, मराठी (बिंदूत सिंधू) ॥।
७ नागयज्ञ नाटक १।
८ मेरी विकासकथा (रूपक) ॥।
९ सत्यसंगीत कविता ॥=
१० आत्मकथा स्वामीजीकी १।
११ सूरज प्रश्न महत्वपूर्ण प्रश्न ॥।=
१२ सुलझी गुत्थियां ,, ।
१३ चतुर महावीर कथाएं १
१४ नई दुनियाका नया समाज ।=
१५ विवाह पद्धति दू. आ. =

१६ ईसाई धर्म (जीवन और उपदेश ।-
१७ कृष्णगीता [हिंदीमें नई गीता.] ॥।

जैनधर्ममीमांसा

१८ ,, पहिला खंड दर्शन इतिहास ५
१९ ,, दूसरा ,, ज्ञानकांड १॥
२० ,, तीसरा ,, चारित्रकांड १॥
२१ बुद्ध हृदय [म. बुद्धकी डायरी] ।=
२२ म राम [नाटक कांनाएं] ।
२३ क्यों सलाम करूँ रा. नै. कथा ≡
२४ शीलवती [कथा और गीत] =
२५ लिपिसमस्या [टेलीग्राफी भी] ।
२६ अनमोलपत्र -
२७ न्यायप्रदीप १
२८ सत्यसमाज और प्रार्थना -
२९ भावनागीत -
३० मुसलिम भाइयों से ≡)

निम्नलिखित पुस्तकें समाप्त हो चुकी हैं दूसरी बार छपनेपर मिल सकेंगे

३१ निरतिवाद ॥=
३२ सर्वधर्मसमभाव =
३३ हिन्दू मुसलिम मेल ।
३४ ,, इत्तहाद (उर्दू) ।

निम्नलिखित पुस्तकें एक दो माह में ही निकल जायँगी। अधिकांश छपचुकी हैं।

३५ मन्दिरका चबूतरा [उप. ॥।) ३६ सच्ची खोज (कहानियाँ) १।

प्रतिमास स्वामी सत्यभक्तजी के सन्देश देनेवाला, केवल कहानियाँ लेख टिप्पणियाँ विनोदी लहरों से भरा हुआ—

संगम (मासिक पत्र) वार्षिक मूल्य ३)

सत्याश्रम वर्धा (सी. पी.)

मुस्लिम भाइयों से

भाइयो

मुहब्बत के साथ 'जय सत्य'

मैं आपसे कुछ बात करूं इसके पहिले अपनी कुछ पहिचान करादेना जरूरी है। क्योंकि इसके बिना यह गलतफहमी होसकती है कि मैं हिन्दू होने से हिन्दुओं की कुछ तरफदारी कर रहा हूँ। पहिचान करादेने से यह गलतफहमी न होगी या बहुत कम होगी।

मैं 'सत्यसमाज' का बानी हूँ। सत्यसमाज वह समाज है जिसमें जातिपांति ऊंच नीच का विचार नहीं किया जाता, और सब मजहबों को इज्जत की जाती है। सत्यसमाज के मन्दिर में मैंने सब मजहबों के बुत या निशानियाँ रक्खी हैं। वहां राम कृष्ण महावीर बुद्ध जरथुस्त ईसा मसीह के बुतों के साथ कुरान शरीफ और मक्का मदीने की तसवीरें रक्खी गई हैं। सत्यसमाज की इबादत में जिसप्रकार ईश्वर भगवान आदि कहा जाता है उसीप्रकार अल्लाह खुदा गॉड आदि भी कहा जाता है, जैसे काशी प्रयाग का नाम लिया जाता है उसी प्रकार मक्का जेरुशलम का नाम भी लिया जाता है। अकेले राम का नाम नहीं लिया जाता, उनके साथ मुहम्मद ईसा जरथुस्त आदि का नामभी लिया जाता है, पूजा नमाज प्रेयर को एक समझा जाता है। मेरी जो खास खास तीन दर्जन पुस्तकें हैं उनमें कुरान और बाइबिल पर भी हैं जिनमें कुरान की तारीफ के साथ उसके उपदेश दुनिया को सुनाये गये हैं। मैं हिन्द में पैदा हुआ हूँ इसलिये अपने को हिन्दू कहता हूँ पर जिस मतलब से लोग हिन्दू कहेजाते हैं उस मतलब से मैं हिन्दू नहीं हूँ। यों मैं राम कृष्ण को मानता हूँ इसलिये हिन्दू भी हूँ, पर जितना हिन्दू हूँ उतना मुसलमान भी हूँ क्योंकि जितना म. राम म. कृष्ण वगैरह को मानता हूँ उतना मुहम्मद साहब को भी मानता हूँ। उन्हें मैं पैगम्बर समझता हूँ।

मैं कांग्रेसी नहीं हूँ। यों कांग्रेस की कुछ बातें पसन्द भी करता हूँ कुछ नापसन्द भी, पर पिछले २४ वर्ष से मैं उसका किसी प्रकार का मेम्बर नहीं हूँ। यह बात मैं इसलिये लिखरहा हूँ कि सियासी मामलों में आप मुझे किसी पार्टी का तरफदार न समझें।

यह तो हुई आज की बात, पुरानी बात यह है कि जन्म से मैं न हिन्दू मजहब माननेवाला हूँ न इसलाम। मैं जिस मजहब में पैदा हुआ हूँ उसमें वेद उपनिषत् महाभारत आदि को मानना और पढ़ना भी बुरा समझा गया है यहां तक कि ईश्वर या अल्लाह को मानना भी कुफ्र है। आज मैं उस मजहब में शामिल नहीं हूँ पर यह बात मैं इसलिये लिखरहा हूँ कि आप समझें कि मजहब के मामले में मुझे किसी की तरफदारी नहीं है। मैं समझता हूँ इतनी बातों से आपको मेरी जरूरी पहिचान हो जायगी। अब सुनिये जो मैं कहना चाहता हूँ।

१—इस मुल्क के मजहबी दंगों से न हिन्दू का भला है न मुसलमान का। दोनों के बेकुसूर आदमी मरते हैं जायदाद बर्बाद होती है और दोनों ही बाहरी लोगों के गुलाम बनते हैं बने रहते हैं। ऐसी हालत में आप दोनों में इत्तहाद की जरूरत समझते हैं कि नहीं? यदि हां! तो क्या आप यह नहीं मानते? कि दोनों की कौम और दोनों का मजहब एक हो जाय और इस ढंग से होजाय कि न तो किसी का मजहब डूबे, न किसी को अपनी बेइज्जती मालूम हो। मजहब के नामपर भी हमें घमण्ड की पूजा न करना चाहिये। घमण्ड और बेईमानी आजाने पर मजहब मजहब नहीं रहता वह कुफ्र होजाता है। असली मजहब तो ईमानदारी और मुहब्बत हैं। ईमानदारी और मुहब्बत के लिये मजहब का नाम कुर्बान किया जासकता है पर मजहब के नाम के लिये ईमानदारी और मुहब्बत को कुर्बान नहीं किया जासकता।

२—क्या आप इसलाम के इस फरमान को नहीं मानते? कि मजहब सभी सच्चे हैं और हर मुल्क और हर कौम में खुदा ने पैगम्बर भेजे हैं। ऐसी हालत में हजरत रामचन्द्रजी और हजरत कृष्णचन्द्रजी को

पैगम्बर मानने में आपको क्या इतराज है? इसलिये मुहम्मद साहब की जय के साथ रामचन्द्रजी आदि की जय बोलें तो क्या बुराई है? इससे मुहब्बत ही बढ़ेगी। और मुहब्बत तो सबसे बड़ा मजहब है।

३-क्या आपने कभी सोचा है कि हिन्दू मजहब क्या है? मैं कहता हूँ कि हिन्दू कोई एक मजहब नहीं है। न तो उसकी कोई एक किताब है न उसका कोई एक पैगम्बर है न उसका कोई एक देवता है न उसमें इबादत का कोई खास तरीका है। एक ईश्वर मानकर भी उसकी सैकड़ों सूरतें और सैकड़ों पैगम्बर हैं, जिसकी खुशी जिसे मानने की है वह उसे मानता है। हां, दूसरे की भी इज्जत करता है उनकी बुराई नहीं करता। विष्णुजी को पूजनेवाला हिन्दू मांस से दूर रहता है पर काली देवी को कालीमैया ही कहता है जब कि कालीजी का खास भगत उसके आगे बकरे काटता है। इतना फर्क होनेपर भी दोनों हिन्दू हैं। कहीं कहीं हिंदू हिंदू में इतना फ़र्क होता है जितना हिंदू मुसलमानों में भी नहीं होता। फिर भी दोनों हिंदू कहलाते हैं। क्या आपने सोचा है कि ऐसा क्यों है? बात यही है कि हिन्दू कोई एक मजहब नहीं है। बाहर से जो जो लोग आते गये और इस मुल्कमें बसते गये वे भी कुछ अपना अपना मज़हब लाये और यहां के भी कुछ नये पुराने मजहब थे, यहां के लोगों ने उन सब में मेल कराके अपनालिया। सब मजहब अपने अपने ढंग के बने रहे और सब मिलकर एक भी होगये। इस ढंग से हिन्दू में जितने मजहब मिले जुले और जिन्हें यहां के लोगों ने अपनाया वे सब हिन्दू धर्म कहलाने लगे। इसलाम भी इस मुल्क में आया है, ईसाई मजहब भी इस मुल्कमें आया है और सैकड़ों सालोंसे यहां जमगया है। करोड़ों हिन्दू इसलाम को अपनाकर मुसलमान कहलाने लगे हैं और लाखों हिन्दू ईसाई मजहब को अपनाकर ईसाई कह-लाने लगे हैं। इसतरह ये दोनों मजहब इस मुल्ककी चीज बनगये हैं। ऐसी हालतमें इन्हें भी हिन्दू मजहब में शामिल करने में क्या इतराज है? पानी और बेलके पत्तों से शिव की पूजा करने वाला शैव हिन्दू है, मिठाई आदि से विष्णु की पूजाकरने वाला वैष्णव हिन्दू है, और बकरा चढ़ाकर कालीमैया की पूजा करने वाला शाक्त भी हिन्दू है, तब गिरजाघर में हजरत ईसा की

बुत रखकर या बिना बुतके प्रेयर करने वाला ईसाई हिन्दू क्यों नहीं? और मसजिद में नमाज पढ़नेवाला मुसलमान या महम्मदी हिन्दू क्यों नहीं? शैव हिन्दू, वैष्णव हिन्दू शाक्तहिन्दू वगैरह के समान ईसाई हिन्दू महम्मदी हिन्दू आदि लफ़्ज़ चलें तो क्या बुराई है? अब तो जैन बौद्ध भी हिन्दू में गिने जाते हैं, हालांकि जैन बौद्ध तो ईश्वर या अल्लाह को भी नहीं मानते। मुसलमानों में तो इतना फर्क है भी नहीं। तब मिलने में इतराज क्या है। हां! इसलामके उसूलों को छोड़ने की कोई जरूरत नहीं, मुहम्मद साहब को भी पैगम्बर मानिये, कुरान को भी पाक किताब मानते रहिये पर ये सब अब हिन्द की चीजें हैं इसलिये हिन्दू मजहबमें ये भी शामिल हैं ऐसा मानकर चलिये। इसलाम भी मानता है कि हर मुल्क और हर कौम के पैगम्बर अल्लाह के ही पैगम्बर हैं और हिन्दू मजहब भी कहता है कि जगत की सब विभूतियाँ ईश्वर का अंश हैं, इसप्रकार आपके मजहब के मुताबिक राम कृष्ण महावीर बुद्ध वगैरह भी अल्लाह के पैगम्बर हैं और हिन्दू मजहब के मुताबिक ईसा महम्मद वगैरह भी 'ईश्वर के अंश' हैं बल्कि हिन्दू मज़हबने तो अपना ढांचा ही ऐसा बनालिया है कि जो जो हिन्द में आकर जमता जाय वह अपनी खासियत रखते हुए भी हिन्दू मजहब कहलाता जाय। हिन्दू मज़हब के इस ढांचे का फायदा उठाकर क्यों न मुल्क के मज़हबी झगड़ों को दफनादिया जाय, अलहदगी दूर की जाय। और मज़हबों के मज़हब मुहब्बत मजहब की जय बोली जाय।

४—ऊपर जो तीसरी कलम है उसे काम में लाने के लिये मैं चाहता हूँ कि ऐसे हिन्दू मन्दिर बनाये जायँ जो हिन्द के सभी मजहबों के मन्दिर हों। राम कृष्ण वगैरह पुराने हिन्दू पैगम्बरों के साथ उसमें ईसा मुहम्मद वगैरह नये हिन्दू पैगम्बरों के बुत हों। जिससे पुराने हिन्दू इन नये पैगम्बरों को भी मान सकें और ईसाई मुसलमान वगैरह नये हिन्दू हिन्द के पुराने पैगम्बरों को भी मान सकें। मैंने सत्याश्रम में ऐसा मन्दिर बनवाया है जिसमें इस मुल्क के पुराने पैगम्बरों के साथ नये पैगम्बरों के भी बुत हैं सिर्फ कमी है तो हजरत मुहम्मद साहब के बुत की। उनकी जगह मुझे कुरान शरीफ़ मक्का मदीने के चित्र रखना पड़े हैं। फिर भी जह

हजरत ईसा वगैरह की खूबसूरत संगमर्मरी बुत हों वहां महम्मद साहब का बुत न हो उसकी जगह कागज की ही कुछ चीजें हों यह मेरे दिल को बहुत खटकता है। साथ ही मंदिर में आनेवालोंके दिलपर इसलामके बारे में मैं जो असर डालना चाहता हूँ वह भी नहीं डाल पाता। इसलिये मैं चाहता हूँ कि आप ऐसी कोशिश करें जिससे इस मुल्क में ऐसे हिन्दू मन्दिर बनसकें जिनमें मुहम्मद साहब के भी बुत हों। यों जब मुझे मुहम्मद साहब की पूजा दूसरे पैगम्बरों के समान करना हैं तो मैं करूंगा ही' अपने अपने ढंग से किसी की पूजा करने या अदब करने का हर एक को हक है' फिर भी मैं चाहता हूँ कि मुझे इस काम में आप की भी मदद मिले जो कि बहुत कीमती साबित होगी। आप खुद भी ऐसे हिन्दू मंदिर बनवायें जिनमें हिन्द में आये हुए सभी मजहबों के पैगम्बरों के बुत हों। मुहम्मद साहब का भी हो।

आप कहेंगे हम मुसलमान हैं बुतपरस्ती को कुफ्र मानते हैं। इसलिये मुहम्मद साहब का भी बुत हम नहीं बनासकते। हम अल्लाह के सिवाय किसीकी इबादत नहीं कर सकते। हजरत मुहम्मद साहब ने खुद कहा था कि मेरा कोई बुत या निशानी न बनाना। "

ठीक है, आइये! इस मसले पर कुछ गहराई से विचार करें क्योंकि इस मसले ने हिन्दुस्तान की और इसलाम की तवारीख ही बदल दी है। इस्लाम दूसरे मजहबों के बारेमें दरियादिल मजहब है जो सब की इज्जत करने को कहता है। मगर दूसरे मजहबों में बुत हैं इसलिये मुसलमान उनकी इज्जत न कर सके, बल्कि कहीं कहीं बुत तोड़ बैठे, नतीजा यह हुआ कि जहां मुहब्बत पैदा होना चाहिये थी वहां दुश्मनी पैदा हुई, इसलाम का मकसद ही बर्बाद होगया। मज़हब से मज़हब के नतीजे न निकलें तो वह मजहब ही क्या रहा? उससे मुहब्बत पैदा न हुई तो उसका आना ही बेकार होगया। खैर, इसबारेमें जो मैं कहता हूँ उसपर सोचिये।

(क) जहां बुतपरस्ती का मतलब है बुतको या किसी चीजको खुदा मानना वहां वह बुरी बात है। मगर बुत को या किसी चीज को खुदा की याद करने के लिये काममें लेना बुरी बात नहीं है या बुरी बुतपरस्ती वहां

है। यहाँ के मुसलमान मगरिब की तरफ मुँह करके ही नमाज पढ़ते हैं तो क्या मगरिब या किब्ला खुदा होगया? बुतपरस्ती होगई? हम जब कुरान पढ़ते हैं तब कागज पर आड़ी टेढ़ी लकीरें देखकर खुदा की याद करते हैं, तो क्या कुरान को काम में लेना बुरा होगया बुतपरस्ती होगई? अगर नहीं तो मुहम्मद साहब को याद करना उनकी जिन्दगी से कुछ सबक सीखना बुतपरस्ती नहीं है, या बुरी बुतपरस्ती नहीं है।

(ख) किसी आदमी की यादगार में आदमी सरीखी शक्ल बनाना बुरी बुतपरस्ती नहीं होती क्योंकि उस शक्ल से आदमी किताब की तरह कुछ सबक सीखता है। किन्तु जब दूसरी शक्ल में यादगार बनाई जाती है तब उसमें बुरी बुतपरस्ती का अन्देसा रहता है। क्योंकि [illegible] शक्ल सूरत ऐसी मिलती नहीं जिसे देखकर ही कुछ बात समझमें आजाय नतीजा यह होता है कि वह उसी चीज की इबादत करने लगता है। जब हम संगे असवद का बोसा लेते हैं तब हमें यही समझमें आता है कि हमने संगे असवद की इज्जत की। पत्थर के उस टुकड़े में कोई ऐसी शक्ल नहीं दिखाई देती जिससे हम उस पत्थर की इज्जत न समझकर खुदा की इज्जत समझें। संगे असवद में अगर किसी आदमीकी शक्ल होती तो हमें उससे किसी पैगम्बर की फरिश्ते की या खुदा की याद जल्दी आजाती। चमकदार ताबूतों को देखकर हमें हुसेन साहब की याद उतनी नहीं आसकती है जितनी हुसेन साहबके बुत या तसवीरसे आसकती है। यादगाह को देखकर, जिसकी यादगाह है उसकी याद न आना बुरी बुतपरस्ती है और उसकी याद आजाना बुरी बुतपरस्ती नहीं है। कुरान की किताब देखकर खुदा की याद न आवे, किताब की खूबसूरती या खत की बनावट में ही नजर अटक कर रहजाय तो बुरी बुतपरस्ती है। खुदा याद आजाय तो बुरी बुतपरस्ती नहीं है। इसलिये हजरत मुहम्मद साहब और हजरत रामचन्द्र जी महाराज वगैरह के बुत बनाकर मन्दिर में रक्खे जायँ और मुसलमान भी उन्हें देखने या उनसे कुछ सबक सीखने जायँ तो न यह बुतपरस्ती का कुफ्र होगा न इससे इसलाम को धक्का लगेगा।

(ग) अरब की बुतपरस्ती और हिन्द की बुतपरस्ती में फर्क है।

अरब के कबीले अपने अपने कबीले का बुत मक्का के मन्दिर में रखते थे। और अपने अपने बुत की इज्जत के लिये आपसमें लड़ते थे और भाइयों का खून बहाते थे। ये बुत आपस के मेलजोल की राह के रोड़े थे इसलिये मुहम्मद साहब ने उन्हें हटाना ठीक समझा। पर संगे असवद को सभी मानते थे उसके नामपर झगड़ा नहीं था इसलिये संगे असवद रहने दिया। इससे मालूम होता है कि उस जमाने में बुतपरस्ती करने न करने का असली सवाल नहीं था सवाल यह था कि आदमी आदमीसे मुहब्बत करे, आदमी आदमी का खून न बहाये। वहां इस मकसद को पूरा करने के लिये बुत हटाने की जरूरत थी लेकिन हिंद में इस मकसद को पूरा करने के लिये बुत रखने की जरूरत है क्योंकि बुतों के बिना हिन्दू मुसलमान मिलकर मन्दिर में नहीं बैठ पाते, हिन्दू इसलाम से मुहब्बत नहीं कर पाते, मुसलमान सब पैगम्बरों की इज्जत करके कुरान को अमलमें नहीं लापाते। अरब में जिस मकसद को पूरा करने के लिये बुतों को हटाने की जरूरत थी हिंद में उसी मकसद को पूरा करने के लिये बुतों को लाने की जरूरत है। हमें मकसद का ही खयाल करना चाहिये।

(घ] हिन्द में बुरी बुतपरस्ती भी है जिसे जबर्दस्ती तो नहीं लेकिन समझा बुझाकर हटाने की जरूरत है। बहुतसे लोग किसी झाड़के नीचे बहुत से गोलमटोल पत्थर सेंदुर पोतकर रखदिया करते हैं और उसकी इबादत करते हैं। उन पत्थरों को देखकर उनकी सूरत शक्ल से न तो खुदा की याद आती है न किसी हजरत की। लोग उस पत्थर में ही कुछ करिश्मा मानते हैं, यह गलत है बुरी बुतपरस्ती है। बहुत से मुसलमान भी इसी तरह से कब्रपरस्ता करते हैं यह भी ठीक नहीं। इबादत की बुत किताब की तरह होना चाहिये। जैसे कि रामकृष्ण महावीर बुद्ध आदि हजरतों के बुत हैं उनकी इज्जत उन हजरतोंकी इज्जत है जिनकी याद आती है। इसलिये आइये हिंदु के हिन्द मुसलमानों में फै[illegible] ती को हटाने की कोशिश करें और अच्छी बुतपरस्ती से फायदा उठावें।

कौनसी बुतपरस्ती बुरी है और कौनसी भली, इसकी जांच करने के लिये हमें यह समझ लेना चाहिये कि जिस बुतपरस्तीमें बुतकी तारीफ की

जाती हो, तो यह बुरी बुतपरस्ती है क्योंकि इससे हमारा दिल खुदा की तरफ या किसी खुदाई नूर की तरफ नहीं खिंचता। लेकिन जहां बुत की खूबियाँ नहीं गाईं जातीं किन्तु खुदा को या उसके पैगम्बर वगैरह की तारीफ की जाती है वहां बुरी बुतपरस्ती नहीं है। हिन्दू रामचन्द्रजी महाराज के सामने रामचन्द्रजी या खुदा की तारीफ करते हैं। कहते हैं—हजरत ! आपने माता पिता की सेवा की, दौलत को ठुकराया मगर भाई-चारा निभाया, शैतानों को सजा दी, वगैरह। यह बुत की परस्ती न हुई बुत के जरिये हजरत की हुई। अगर बुत की परस्ती होती तो कहते—हजरत, आप संगमर्मर के बने हैं बहुत चिकने खूबसूरत और वजनदार हैं बहुत ही होश्यार कारीगर ने आपको बनाया है वगैरह। पर ऐसी बुतपरस्ती मन्दिरों में नहीं होती तब उसे अपनाने में हर्ज क्या है। हिन्दू मन्दिरों में जब मुहम्मद साहब का बुत रक्खा जायगा तब उस बुत की तारीफ नहीं आयगी मगर हजरत की तारीफ की जायगी और उस खुदा की तारीफ की जायगी जिसने हजरत को इस दुनिया की भलाई के लिये आपसी मुहब्बत के लिये भेजा था। क्या अब भी आप अच्छी बुरी बुतपरस्ती में फर्क न करेंगे और मुहब्बत की राह में न बढ़ेंगे ?

[ङ] ऐसा कोई मजहब नहीं जो बुतपरस्ती के बिना रह सके। क्या कोई मुसलमान किब्ला को मामूली मकान या संगे असवद को मामूली पत्थर की तरह ही देखेगा ? क्या मसजिद को मामूली ईंट पत्थर और कुरान को मामूली कागज समझेगा ? अगर वह इनकी या ऐसी ही किसी चीज की खास इज्जत करता है तो वह बुतपरस्त है ही। और इसमें कोई बुराई भी नहीं है। बुतपरस्ती जहां खुदा को भुलादेने वाली और आपस में झगड़े पैदा करने वाली हो वहीं वह बुरी है। यों मन्दिर मसजिद गिरजाघर सब खुदा के ही बुत हैं जिनकी हमें एकसी इज्जत करना चाहिये। इसीलिये मैंने अपने कुरान गीत में लिखा है—

मसजिदों में मन्दिरों में और चर्चों में है तू।
हैं सभी बुतखाने तेरे हो सभी से क्यों न प्यार॥

और इसी से जनाब शहाबुद्दीन मुहम्मद शबिस्तरी को लिखना पड़ा था।

मुसल्मां गर बिदानिस्ते कि बुत चोस्त ।

बिदानिस्ते कि दीं दर बुतपरस्तीस्त ॥

मुसलमान अगर जानते कि बुत क्या है ? तो जान जाते कि बुतपरस्ती ही तो दीन मजहब) है ।

क्या अब भी आप अच्छी बुरी बुतपरस्तीमें फर्क न करेंगे और अच्छी बुतपरस्ती न अपनायँगे ?

आप कहेंगे कि जब हजरत मुहम्मद साहब खुद अपनी बुत या निशानी न बनाने के लिये फरमागये हैं तब हम क्या करें ?

आपका कहना ठीक है क्योंकि हजरत अगर ऐसा न फरमाते तो बुत-परस्ती की सब बुराइयाँ अरबमें फिर पनप उठतीं । वह जमाना ही ऐसा था । मगर हजरत के बहिश्त जाने के सदियों बाद, अरब से सैकड़ों कोस दूर हिन्दमें, जहां अच्छी बुतपरस्ती का रिवाज खूब था वहां हजरत का बुत न बनाना हजरत की बेइज्जती करना था । जहां हमने मामूली फकीरों की कब्रें और दरगाहें बनाई हों, मामूली बेगमोंके लिये ताजमहल बनायें हो, हुसेन की यादगार में जहां हम हरसाल ताबूत बनाते हों, और तो और जहां हमारे कमरों में हमारे बापदादों को, दोस्तों की, नवाबों की, बेगमों की, यहां तक कि सिनेमास्टारों की तसवीरें चमचमाती हों वहां पैगम्बरे खुदा हजरत मुहम्मद साहबकी तसवीर न होना कितने अचरज और बेवफाई की बात है । जहां हर मजहबों के पैगम्बर के बुत हों वहां सिर्फ इसलाम के पैगम्बर का बुत न हो यह एक ऐसी खामी है जिसे किसी भी तरह दरगुजर नहीं किया जासकता ।

एक बात और, हजरत के फरमाँबरदार होना अच्छी बात है । पर हजरत ने अपनी जिन्दगीमें सैकड़ों बार कहा था कि मैं एक मामूली आदमी हूँ तो क्या हज़रत की फरमांबरदारी के नामपर आप उन्हें मामूली आदमी हा मानेंगे ? हजरत तो हजरत थे पर आजकलके ही कोई पढ़े लिखे ईमा-नदार जनाब आपके पास आयें और कहें कि मैं तो नाचीज अदना आदमी हूँ, तो क्या आप उनके लायक सलूक न करके उन्हें नाचीज़ और अदना

आदमी की तरह ही मानेंगे ? अगर नहीं तो हमें हज़रत का सलूक उसी तरह करना चाहिये कि जिस तरह इस मुल्कमें दूसरे पैगम्बरों का किया जाता है ।

बस ! इसबारेमें मैं काफी कह चुका हूँ । अगर आप मानते हैं कि मज़हब का काम मजहबी घमंड फैलाना नहीं है किन्तु मेलमुहब्बत बढ़ाना है तो बनाइये ऐसे मन्दिर जिसमें हिन्दमें फैले हुए सभी मज़हबोंके पैगम्बरों के बुत हों अच्छी निशानियाँ हों और सब मिलकर सब की इज्जत करें, मजहबी झगड़ों को दफनाकर मुहब्बत बढ़ायें ।

५–हमारा मजहब कोई भी हो पर हिन्द के बाशिंदे उसी तरह जाति से हिन्दू हैं जिस तरह चीन के बाशिन्दे चीनी, इंग्लेंड के बाशिन्दे अंग्रेज, जापान के बाशिन्दे जापानी । मजहब से कोई अपने को मुसलमान कहे या ईसाई मगर जाति से वह हिन्दू है । आखिर उसके पुरखे हिन्दू थे । मजहब बदल सकता है पर पुरखे कैसे बदल सकते हैं । हम इस मुल्क के सभी बाशिन्दे एक कौम या एक जातिके हैं । आपके पुरखों में किसी न किसी पीढ़ी में एक ऐसा आदमी निकल आयगा जिसने इसलाम को अपनाया था । तो क्या उस दिन उसका खून भी बदला ? नस्ल भी बदली ? अगर नहीं तो फिर आप हिन्दू हैं । आप जोर से कहिये कि हम जाति से हिन्दू हैं ।

म. बुद्ध का मजहब इसी मुल्क में पैदा हुआ आज उसके मानने वाले चीन में करोड़ों हैं पर वे अपने को चीनी कहते हैं हिन्दू नहीं, वहां के मुसलमान भी अपने को चीनी जाति का मानते हैं तब आप अपने को हिन्दू जाति का क्यों न माने ? इस देश में अंग्रेजों ने लाखों ईसाई बनाये पर उनमें से अंग्रेज एक भी न बना तब उनकी हिन्दू के सिवाय और क्या जाति हो सकती है ? माना कि कुछ मुसलमान ऐसे भी होंगे जिनके पुरखे बाहर से आये थे । पर वे शादी विवाह के जरिये हिन्दुओं में ही मिलगये । यहां तक कि अकबर के बाद सभी मुगल बादशाहों और शाहजादों में मां की तरफ से हिन्दू खून बहता था । ऐसी हालत में उनक

जाति भी हिन्दुओं से बाहर कैसे रह सकती है। यह तो उस वक्त के हिन्दुओं का झूठा घमण्ड और नादानी थी कि उनने बादशाह अकबर की कोशिश कामयाब न होने दी, नहीं तो उसी वक्त दोनों मिलकर एक होगये होते। खैर! वह नादानी हमें क्यों करना चाहिये। एक कौम बने बिना किसी मुल्ककी गुजर नहीं होसकती। पाकिस्तान अगर अलग भी होजाय तोभी पाकिस्तानके सब हिन्दूमुसलमानों को पाकिस्तानी के नामसे एक कौम बनना पड़ेगा। अमेरिका तभी एक जोरदार मुल्क बन पाया जब सब मुल्कों के लोग अमेरिकन बनगये। वहां तो उनकी नस्ल भी जुदी जुदी थी बोली भी जुदी जुदी थी। यहां तो हिंदू मुसलमानों की नस्ल भी एक है बोली भी एक है तब एक कौम क्यों नहीं कहलासकते? अलहदगी क्यों रहे? इसलाम ने कबीलों में टूटे अरबको जोड़ा यहां वह क्यों न जोड़े, या जुड़े हुए को क्यों तोड़े? माना कि हिन्दुओं में हजारों जातपातें हैं। यह बहुत बुरी बात है जिसे कि आजका हर एक समझदार हिन्दू खुल्लमखुल्ला मंजूर करता है और कोशिश करता है एक ये टूट जायँ और सब हिन्दू मिलकर एक होजायँ। यह इसलाम की सच्ची जीत है इसमें आप भी हाथ बटायें। बामन ठाकुर बानिया ईसाई मुसलमान वगैरह सब मिलकर एक हिन्दू कौम बनजायँ और भीतर की अलहदगी दूर करने की कोशिश करें। इससे मजहब को कोई धक्का नहीं लगता मुहब्बत इत्तफाक और आपस में यकीन बढ़ता है। क्या अब भी आप जाति से हिन्दू कहलाने के लिये तैयार नहीं है? जैसे कि असलियत में आप हैं।

बादशाह अशोक, जो मजहब से हिन्दू नहीं था ईश्वर को भी न मानने वाला बौद्ध था। पर हिन्दू उसे अपने पुरखों में गिनते हैं। आप कब से मुसलमान होगये क्या इसीलिये चन्द्रगुप्त अशोक विक्रम को अपना पुरखा न मानेंगे। जब कि सैकड़ों पीढ़ियों से आप इसी मुल्क के बाशिन्दे हैं। मैं सत्यसमाज का बानी हूं मेरे पिता सत्यसमाजी नहीं थे तो क्या इसीलिये उन्हें बाप न कहूँ? मजहब का मतलब आदमियत का सबक सीखना है न कि अपने पुरखों से नफरत करना या उन्हें पुरखा ही न मानना। आप मुसलमान होगये बहुत अच्छा किया, इसलाम की खूबियों से फायदा

उठाइये ! पर अपने पुरखों को न भूल जाइये ! उनकी हस्तीसे इनकार न कीजिये । इसलिये दिल खोलकर कहिये कि हम हिन्दू हैं, मुहम्मदी हिन्दू हैं मगर हिन्दू हैं ।

६—बहुतसे मुसलमान झूठे घमंड के कारण शेखी मारा करते हैं कि हमने हिन्दुओं को जीता था, वे हमारे गुलाम हैं वगैरह और इसीसे वे अपने खास हक मागते हैं । उनकी बात सुनकर या पढ़कर मुझे सूरे लुकमान की वह आयत याद आती है जिसमें कहा गया है कि "अल्लाह किसी इतराने वाले शेखीखोर को पसन्द नहीं करता" मैं मानता हूँ कि आप ऐसी शेखी मारना पसन्द नहीं करते फिरभी इसबारे में दो बातें कहदेना मैं जरूरी समझता हूँ । जिससे आप उन गुमराह मुसलमानों को भी समझादें ।

(क)अंग्रेजों ने आखिरी मुगल बादशाह मुहम्मद शाह को कैद कर लिया और उसके शाहजादों को सड़कपर गोलीसे मार डाला, राज्य छुड़ालिया । अब मानलो अंग्रेजों का राज्य चला जाय और यहीं बसे हुए अंग्रेज आपसे यह कहें कि हमने तुम्हें जीता था, तुम्हारे बादशाह को कैद किया था तुम्हारे शाहजादों को गोलीसे भूना था इसलिये हमें खास हक दो । तो आप उन्हें खास हक देंगे या जहन्नुम रसीद करने की सोचेंगे ? एक मुल्क पर बेकुसूर चढ़ाई करना और उसे जीतना ऐसा काम है जिसकेलिये सजा मिलना चाहिये और अल्लाह के दर्बार में मिलेगी भी, उसकेलिये न तो किसी को शेखी मारना चाहिये न खास हक मांगना चाहिये और न ऐसे डाकुओं की औलाद होने का घमंड करना चाहिये ।

(ख)—ऊपर की बातमें अगर इस मुल्क के ईसाई अगर आपसे कहें कि हमने तुम्हारे बादशाह को जीता था तो क्या आप यह न कहेंगे कि कमबख्तो ! अंग्रेजों ने तो तुम्हारे पुरखों को भी जीता और हमारे पुरखों को भी । अब तुम ईसाई होने से ही जीतनेवालोंमें कैसे शामिल होगये ? इसीप्रकार आजका हिन्दू कल मुसलमान होते ही तैमूर या अकबर का शाहजादा कैसे बनसकता है ? क्या आज मैं मुसलमान बनजाऊं तो

इस मुल्क को जीतने वाला बनजाऊंगा।

(ग) सूरे बकर में पुरखों के बारेमें एक आयत आती है कि—वह लोग थे जो कर गुजरे, उनका किया उनको और तुम्हारा किया तुमको।" इस आयत के अनुसार हर आदमी को खासकर मुसलमान को पुरखों का घमंड न करके यही देखना चाहिये कि आज हम विद्या में, दौलतमें, परहेजगारीमें कैसे हैं। इन बातों में मुसलमानों के पास और सब हिन्दुस्तानियों के पास घमंड लायक कुछ नहीं है और जब तक गुलाम रहेंगे तब तक होगा भी नहीं।

उम्मीद है कि घमंड की बातोंसे अब भाई भाई का दिल तोड़ने की कोशिश न होगी।

(७) मुल्कको पूरीतरह एक कौम बनाने के लिये जरूरत है कि हिन्दू मुसलमानों में शादीविवाह हों। इस मामले की कानूनी अड़चनें भी दूर कीजायँ। जिन मुसलमानों से हिन्दुओं का खानपान मिलता हो उनमें महब्बत के साथ रोटी बेटी चालू होना चाहिये। आजकल तबलीग और शुद्धि के नामपर जो छीनाझपटी होती है उससे मुहब्बत तो कोसों दूर होजाती हैं और दुश्मनी बढ़ जाती है। इसलिये शादी विवाह सब की रजामन्दी से होना चाहिये। बाकायदा बरात आना चाहिये, दोनों तरफ के लोग शामिल होना चाहिये और जैसे एक जातिकी शादियों में जिन्दगी भर रिश्तेदारी निभती है वैसे निभना चाहिये।

अगर दूल्हा के रिश्तेदार शादी में दूल्हा का साथ न दें, या दुलिहन के रिश्तेदार दुलिहन का साथ न दें तो उनकी कौम के दूसरे आदमियों से अर्जकर उन्हें साथी बनाकर शादी की रस्म अदा करना चाहिये। मतलब यह कि ऐसी शादियाँ छीनझपटकर या चुपचाप न करना चाहिये। शादी का रिवाज तो एक ऐसा रिवाज है जिसके जरिये दो इन्सान ही नहीं लेकिन दो कबीले दो कौमें तक मुहब्बत के रंग में रंगजाती हैं तब क्यों इस मुल्क में वह एक तरह की चोरी डकैती समझी जाय? वह क्यों इस तरीके से की जाय कि उससे दुश्मनी बढ़े।

हां! ऐसी शादियों के लिये यह जरूरी है कि दोनों एक दूसरों के

मजहब की इज्जत करें। सो जैसा मैंने पहिले कहा है इसलाम तो दूसरे मजहब की इज्जत करना जरूरी समझता ही है और हिन्दू मजहब के लिये तो इसलाम कोई दूसरा मजहब ही नहीं रखना है मिलजुलकर एक बन जाना है। मेलमिलाप की इस स्कीम को क्या आप ठीक न समझेंगे? माना कि कुछ मुसलमान और कुछ हिन्दू हिचकिचायेंगे पर अगर आप तैयार होवे तो यकीन रखिये दोनों में काफी ऐसे सख्श मिल जायँगे जो मजहबों के भी मजहब इस मुहब्बत मजहब को अपनाने में आगे कदम बढ़ायेंगे। तभी इसलाम की जीत होगी, हिन्दू धर्म की जीत होगी इस मुल्क की जीत होगी, इन्सानियत की जीत होगी। और साथ ही साथ होगी शैतानियत की और हैवानियत की हार।

८–हिन्दू मुसलमानों में कुछ बातें ऐसी हैं जिनपर जब चाहे और जहां चाहे झगड़ा हो जाता है। वे हैं बाजा गाय और सुअर। यों बाजा हिन्दू भी बजाते हैं मुसलमान भी बजाते हैं। ज्यादातर खुशी में बजाते हैं कभी रंज में भी बजाते हैं जरूरत इस बात की है कि दोनों एक दूसरे की खुशी में और रंज में शामिल हों। झगड़ा रहे ही नहीं। पर जब तक यह नहीं हो पाता तब तक कुछ ऐसे कायदे बना लेना चाहिये जिससे किसी की तौहीन न हो। सारा झगड़ा इस बात का है कि एक दूसरे की तौहीन करना चाहते हैं। मजहब का तो बहाना है। न तो मजहब का इन बातों से कोई ताल्लुक है न मजहब का किसी को खयाल है। इसलिये जरूरत इस बात की है कि न तो कोई घमण्ड दिखाये न कोई किसी की तौहीन करे। इसकेलिये हमें ऐसे कायदे बना लेना चाहिये जिनका अमल मुल्क में सब जगह एकसा किया जाय। जहां जिसका जोर हुआ वहां उसने वैसी धाँधली चलाली ऐसा न होना चाहिये। इस बारे में मेरे ये सुझाव हैं।

(१) क–जहां जहां मन्दिर मसजिद गिरजाघर हों वहां सुबह शाम और दुपहर के आधे आधे घण्टे तक कोई बाजा न बजाय। न मन्दिर के आगे मुसलमान ईसाई, न मसजिद के आगे हिन्दू ईसाई न गिरजाघर के आगे हिन्दू मुसलमान। यह नियम पारसियों और सिक्खों के मन्दिरों या

गुरुद्वारा आदि के लिये भी लागू रहे। बाजेबन्दी का समय पहिले से बांध दिया जाय और उसका निशान फहका दिया जाय। बाजेबन्दी का समय खतम होनेपर वह निशान उतार लिया जाय। फिर बाजे बजसकें।

(ख अथवा बाजे की रोक बिलकुल हटाली जाय। मतलब यह कि दो में से कोई बात की जाय या और कोई कायदा बना लिया जाय पर अवध का जो कायदा हिन्दू मुसलमानों के लिये करें वह मुसलमान हिन्दुओं के लिये भी करें।

२-रात को नौ बजे से सुबह पांच बजे तक कहीं बाजे न बजाये जायँ। त्यौहारों में भी बन्दिश रहे।

३-हरएक आम सड़क पर सब के जुलूस निकल सकें। सिर्फ इस बात का खयाल रहे कि दूसरे लोगों के आने जाने में ज्यादा तकलीफ न हो या आना जाना न रुक जाये। आम तौर पर बीस फुट से कम चौड़ी सड़कों पर जुलूस न निकाला जाय।

४-किसी भी जानवर की कुर्बानी या हत्या खुले आम न की जाय न कुर्बानी के जानवर का जुलूस निकाला जाय, फिर चाहे वह गाय हो भैंस हो बकरा हो सुअर हो।

५-दुधारू जानवर या खेती के जानवर की हत्या या कुर्बानी न की जाय।

और भी कुछ जरूरी नियम कायदे बनाये जासकते हैं जो सबको एक सरीखे हों, जिससे किसी की तौहीन न होती हो और जिससे मुल्क की माली हालत को नुकसान न होता हो।

हर एक को इस तरह का दावा कभी न करना चाहिये कि यह हमारा मजहबी हक है। आम पब्लिक के जो हक हैं उनमें अड़चन डालकर किसी के मज़हबी हक की कोई कीमत नहीं। मजहब का सब से बड़ा हक तो यह है कि एक आदमी दूसरे आदमीकी खिदमत करे, न कि घमंड से एक दूसरे को नीचा दिखानेकी कोशिश करे। क्या आप मुल्की अमन के लिये ऊपर की हिदायतों को पसन्द न :

—हमें कहचुका हूं कि मजहब अलहदगी पैदा करने के लिये नहीं है पर मैं देखता हूँ मुसलमान होने से आप नाम भी बदलते हैं पोशाक भी बदलते हैं यहां तक कि अपनी बोली और लिपि [रस्म उल खत] भी बदलते हैं। ऐसा क्यों होना चाहिये? मुसलमान होना कोई बुरी बात नहीं है एक घर के चार भाई चार मजहबों को पालें तो भी बुराई नहीं है पर इससे क्या वे भाई भाई न रहेंगे? इसलाम जब अरब स फारस में पहुंचा तो उसने फारस की बोली और वहां के रीतिरिवाज अपनालिये। अरबी 'अल्लाह' से ज्यादा फारसी खुदा बोलना शुरु कर दिया। तब आप हर हालतमें हिन्दू या हिन्दुस्तानी क्यों नहीं बनते या बने रहना चाहते? आज भी खेड़ों में हिंदू मुसलमानों की बोली में पोशाक में रहनसहनमें कोई फर्क नहीं होता। इतने पर भी शहरी मुसलमानों से वे कम मुसलमान कम ईमानदार और कम परहेजगार नहीं होते। हम सब एक कौम हैं इसलिये हमें इसलाम की किसी भलाई को न छोड़ते हुए भी एक कौम ही बनने की कोशिश करना चाहिये। आप जरा इन बातों पर खयाल करें।

(क) मजहब से पोशाक का ताल्लुक न बनाये बल्कि जिस सूबे के रहने वाले आप हों वहां के पुराने रीतिरिवाज, आबहवा वगैरह के मुताबिक पोशाक पहिनें। कोई तब्दीली भी करना हो तो फैशन की बुनियाद पर और किसी बुनियाद पर करें मजहब की बुनियाद पर नहीं। हिन्दू की टोपी अलग मुसलमान की अलग यह मजहबपरस्ती नहीं है क्योंकि मजहब अलहदगी नहीं इत्तफाक सिखाता है।

(ख) मजहब के लिये नाम बदलने की जरूरत नहीं है। ईसाइयों में जैसे मजहब बदलनेपर भी सावित्री शान्ता मधुकर दिनकर आदि हिन्दू नाम होते हैं उसीप्रकार मुसलमानों में भी सूबे के मुताबिक नाम होना चाहिये। हां! यह ठीक है कि हम जिस मजहब को मानते हैं उस मजहब के खास खास हजरतों के नाम अपने नामके साथ लगाना चाहते हैं। यह बिलकुल ठीक है। फिर भी नाम का ढंग इसी मुल्क का होना चाहिये जिसमें कि आप सदियों से रहते हैं। मुहम्मददास अली प्रसाद उमरचंद फातिमा देवी उमरकुमारी वगैरह नाम रखिये। जिसमें

इसलाम की भी याद रहे और इस मुल्क की भी याद रहे। इसकेसिवाय भी आप मामूली नाम रख सकते हैं। हर बात में अलहदगी बताने की क्या जरूरत है? नाममें मजहब बताना ही चाहिये ऐसा हठ क्यों! अलहदगी बताने की क्या जरूरत है?

[ग] बोली के बारे में भी अलहदगी न बताइये। बंगाल का मुसलमान बंगाली ही बोले गुजरात का गुजराती, वह मजहबके नामपर उर्दू की तरफ क्यों झुके? तुर्किस्तान का मुसलमान अपनी बोलीमें से अरबी लफ्ज चुनचुनकर निकालता हैं, चीनके रूस के मुसलमान भी अपनी चीनी या रूसी बोली बोलते हैं। आप भी अपने सूबे की बोली बोलिये! रही कौमी जुबान की बात, सो हिन्द बहुत बड़ा मुल्क है उसके लिये एक कौमी बोली की जरूरत तो है ही, जिससे मुल्क के सब सूबों के लोग आपसमें अच्छी तरह मिल जुल सकें। इसकेलिये सब सूबों के लोगों के सुभीते की नजर से और उनकी रायसे कौमी बोली बनाइये। यह तो तयशुदा सी बात है कि अरबी फारसी के जो लफ्ज इस में पचगये हैं वे अलग न किये जायँगे। वे तो अब इसी मुल्क के होगये। पर हां। आगे केलिये उनकी तरफदारी नहीं की जासकती। इस केलिये तो इसी मुल्क की बोलियों से मदद लेना होगी। पर जो भी बोली बनेगी उसका नाम हिन्दी ही होना चाहिये क्यों कि इस इस मुल्क का नाम हिन्द है। हर एक मुल्क की कौमी बोली उस मुल्क के नाम पर ही होती है। और उर्दू लफ्ज का ताल्लुक तो न किसी मुल्क से है न किसी मजहब से, इसलिये यह नाम तो आपको किसी तरह भी न चलाना चाहिये। हिन्दी नामसे ऐसी आमफहम बोली को कौमी बोली बनाइये और मानिये जो इस मुल्ककी हो सब सूबों की बोली से ज्यादा ताल्लुक रखती हो। तभी हम एक कौमी बोली बना सकते हैं नहीं तो अंग्रेजी की गुलामी ही हमारे पल्ले पड़ी रहेगी। मैं चाहता हूँ कि इस बदकिस्मती की तरफ न आप खुद जाना चाहेंगे न मुल्क को लेजाना चाहेंगे।

(घ) लिपि का भी एक सवाल है। लिपि के बारे में भी हमें इसी मुल्क की किसी लिपि को लेलेना चाहिये। लिपि का भी किसी मजहब से कोई ताल्लुक नहीं। वह भी मुल्क की चीज है। जब कि आप

हिन्द के हैं फारस की लिपि की तरफदारी क्यों करें ? फारस की लिपि अपनी और हिन्द की पराई, यह मानकर आप मुल्क की तौहीन क्यों करेंगे ? हां ! अच्छाई की नजर से किसी लिपि को अपनाना ठीक कहा जासकता है पर इस नजर से फारसी लिपि इस मुल्क की लिपियों की किसी तरह बराबरी नहीं करती । न फारसी लिपि में इस मुल्क की सब बोलियां ज्यों की त्यों लिखीं जासकतीं हैं न छापखाना वगैरह में सुभीता है । टाइपराइटर का भी सवाल है लिखने का तरीका भी काफी कठिन है । खैर ! यहां इन सब बातों की चर्चा ज्यादा नहीं करना है । आप कम से इतना तो मान ही लें कि लिपि मजहबी घमण्ड की चीज़ न बने । हां अच्छेपन की नजरसे जो बेहतर साबित हो उसे अपनालें अथवा बेहतर से बेहतर बनाने की तैयारी करें । आखिर मुल्क में एक लिपि की जरूरत तो है ही ।

आदमी पैदा होने के साथ लिपि और बोली सीखकर नहीं आता, वह तो सीखना पड़ती है तब उसके नाम का घमण्ड क्यों करें । दुनिया की हर चीज में हम बेहतरीन का खयाल रखते हैं चाहे मशीन हो कपड़ा हो औजार हो या और कोई चीज हो तब लिपि और बोली के बारे में अपनेपन के घमण्ड से पुरानी और खराब से क्यों चिपट रहें ? और भाई-चारा क्यों तोड़ें ?

आदमी बोलता और लिखता इसीलिये है कि अपने दिल की बात दूसरे को समझाये और ज्यादा से ज्यादा आदमियों को समझाये लेकिन घमण्ड में आकर वह ऐसी बोली बोलता है और ऐसी लिपि लिखता है कि कम से कम आदमी समझें और मुश्किल से समझें, वह भूल जाता है कि बोलने और लिखने का जो मकसद है वह बर्बाद होजाता है । इन सब बातों का खयालकर इन्साफ और मुहब्बत की नजर से आप इस सवाल को हल करने की कोशिश करें । फजूल की जुदाई जो हमने अपने सिर लाद रक्खी है एक आदमी के नाते वह हमें दूर करना चाहिये । और हर तरह एक कौम बनना चाहिये ।

१०—अब आइये हम सियासी मामलों पर भी कुछ नजर डालें ।

सच पूछा जाय तो हिन्दू मुसलमानों के सियासी मामले अलग अलग हैं ही नहीं। दोनों ही गुलाम हैं, दूसरे मुल्कों में दोनों एक ही निगाह से देखे जाते हैं, अकाल पड़ता है तो दोनों मरते हैं, दोनों अमीर हैं गरीब हैं, जमींदार हैं राजा नवाब हैं ऐसा कुछ नहीं है जो हिन्दुओं का अलग और मुसलमानों का अलग। पर गैरमुल्की सल्तनत ने हमें गुलाम रखने के लिये लड़ाया और लड़ने के बहाने इकट्ठे कर दिये। कुछ लीडरों को मुट्ठी में किया उन्हें बढ़ाया और उनके जरिये ऐसी ऐसी झूठी दहशतें बैठा दीं कि हम भाई भाई दुश्मन होगये और जो हमें लूटते हैं, बदमाशी के जोरपर जबर्दस्ती हम पर हुकूमत करते हैं उन्हीं का मुँह हम बात बात में ताकते रहे और अपने भाइयों से लड़ते रहे। भाई की इन्साफ की बात भी हमें खटकी और उनकी जूतियां भी हमने चाटीं। पर अब हमें इस तरह हैवान नहीं बनना चाहिये।

१५- अंग्रेजों ने हमें सिखाया कि मुसलमानों को हिन्दू के नीचे क्यों रहना चाहिये उनसे क्यों दबना चाहिये। वे अपने हक अलग लें हम दिलायेंगे। ये हक क्या हैं? यही कि असेम्बलियों में मुसलमान अपने अलग मेम्बर भेजें। मुसलमान मेम्बरों को गैरमुसलमानों से कोई मतलब नहीं और गैरमुसलमानों को मुसलमानों से कोई मतलब नहीं। इस तरह उन्हें झूठा डर दिखाकर बिलकुल अलग अलग चुनाव कर दिया, एक तरह से सियासी रिश्ता तोड़ दिया। नतीजा यह हुआ कि असेम्बलियों में गैरमुसलमानों की पर्वाह न करने वाले मुसलमान जाने लगे और मुसलमानों की पर्वाह न करनेवाले गैरमुसलमान जाने लगे। हां! मुसलमानों के लिये कुछ जगहें तय करदी जातीं या ऐसा कायदा बनादिया जाता कि जब तक किसी मेम्बर को इतने मुसलिम और इतने गैरमुसलिम वोट न मिलें तब तक वह चुना न जाय तो कोई हर्ज नहीं था। मिलाजुला चुनाव होने से भाई भाई में दुश्मनी न होती और किस के हक भी न मारे जाते। पर गैरमुल्की सरकार तो हमें लड़ाना चाहती थी और इसकेलिये उसने कुछ लालच देकर या उल्टी पट्टी पढ़ाकर हमसे कुछ लीडर फोड़ लिये थे, बस! उसका जादू चलगया और हम उल्लू

बनगये । बस ! अब हम जगह जगह हैवान या शैतान बनकर भाई भाई का खून बहाते हैं और सब मुल्कों में हमारी नालायकी का ढिंडोरा पिटता है । इस तरह इस अलग चुनाव ने हमारी सियासत में ऐसा जहर घोल दिया है कि हमारी सियासत और हम मौत के घाट उतर रहे हैं । क्या आप इस जहर को महसूस नहीं करते ? होश में आइये और देखिये तो इससे घर बार कैसा चौपट हो गया है ।

जहां मुसलमान कम हैं वहां अलग चुनाव होनेपर भी कम हैं जहां गैरमुसलमान कम हैं वहां अलग चुनाव होनेपर भी कम हैं । फायदा किसी को कुछ नहीं हुआ । पर अलग चुनाव से दिल अलग अलग होगये इसलिये सियासत मिली जुली न रहसकी, और दोनों महसूस करने लगे कि हम पर दूसरे की हुकूमत है । अगर चुनाव मिलाजुला होता तो सब को यही महसूस होता कि सब पर सबकी हुकूमत हैं हमारी हमपर हुकूमत है । बस ! जहां आज दोजख दिखाई देरहा है वहीं बहिश्त दिखाई देने लगता ।

आज जो लीडर हैं उसदिन भी करीब करीब वे ही रहते, पर उस दिन उनके दिल मुहब्बत और यकीन से भरे हुए होते । आज बेरुखी है दिल में जलन हैं कदम कदम पर छेड़खानी है इससे तरक्की रुकी हुई है उसदिन मुल्क के लिये जोश होता मेल ज़ोल होता तरक्की होती । आप इस मसले पर खूब गहराई से सोचें और अलग चुनाव के कुफ्र को दफनाने की कोशिश करें ! आप देखेंगे कि साल दो साल में ही दोजख की जगह बहिश्त का रंग दिखाई देने लगा है ।

२—आप शायद सोचते हैं कि पाकिस्तान बनजाने से सब ठीक होजायगा । सचमुच पाकिस्तान बनने से सब ठीक होता हो तो पाकिस्तान बना लेना चाहिये पर पाकिस्तान से इस मुल्क का तो कोई फायदा है ही नहीं लेकिन मुसलमानों का भी कोई फायदा नहीं है । आखिर पाकिस्तान बनजाने पर आप वहां क्या करेंगे ? आप कहेंगे इस्लाम के मुताबिक जिन्दगी की तरक्की करेंगे । पर मैं पूछता हूँ कि इसलामी तरक्की

से आपका मतलब क्या है ? ज्यादा परहेजगार बनना ज्यादा सच बोलना ज्यादा ईमानदारी से काम लेना, ब्याज न खाना, शराब न पीना, औरतों के साथ अच्छा सलूक करना, गरीबों को खैरात करना, यतीमों को न लूटना, मतलब यह कि पूरी तरह मोमिन और खाकसार बनजाना ही इसलामी तरक्की है सो इसमें आज क्या अड़चन है ? आप इस राह में खुशी से आगे बढ़िये। आप की राह में लोग रोड़े न अटकायँगे बल्कि आपके शागिर्द बन जायँगे। इसकेलिये तो पाकिस्तान की जरा भी जरूरत नहीं है।

आप कहेंगे—नहीं, पाकिस्तान में यह सब नहीं करना है बल्कि पाकिस्तान में क—उर्दू का ही राज्य होगा, ख—सुअर कोई न मार सकेगा ग—गाय की खूब कुर्बानी होगी, घ—कानून कुरान के मुताबिक बनेंगे, ङ—मसजिद के आगे कभी कोई बाजा न बजा सकेगा, च—नमाज की छुट्टी रहेगी, मतलब कि नमाज के लिये रेलगाड़ी रोकी जायगी कचहरी का काम बन्द होगा, छ—मुसलमानी त्यौहारों की ज्यादा से ज्यादा छुट्टियां रहेंगी, ज—मुसलमानी पोशाक का ही रिवाज रहेगा। झ—दाढ़ी रखना चोटी कटाना जरूरी होगा। ञ—ज्यादातर सरकारी नौकरियां मुसलमानों को ही मिलेंगी वगैरह।

अगर पाकिस्तान का मतलब ऐसा ही है तो इसमें बहुतसी बातें ऐसी हैं जो आज भी हो सकती हैं क्योंकि ये काम मुल्की सरकार के नहीं सूबे की सरकार के हैं जो आज भी ऐसे काम कर सकती है। हां ! कुछ काम ऐसे हैं जो पाकिस्तान में भी नहीं होंगे क्योंकि इससे पाकिस्तान की ही बर्बादी हो जायगी। गाय बैल न रहने से पाकिस्तान की खेती बर्बाद हो जायगी और थोड़ी बहुत जो बच रहेगी उसे सुअर चर जायँगे इस प्रकार पाकिस्तान अकालिस्तान होजायगा। नमाज के लिये रेलें और कचहरियों का काम रोककर जितने वक्त की बर्बादी होगी उसका सौवां हिस्सा भी फायदा नमाज से नहीं हो सकता दूसरे मुसलमानी मुल्कों में भी नमाज के लिये ऐसे काम नहीं रोके जाते।

दूसरी बात यह है कि बहुत से काम पाकिस्तान में भी मुसलमानों को ही लागू होंगे हिन्दुओं को नहीं। अगर हिन्दुओं के साथ जबर्दस्ती कीगई तो उसका बदला हिन्दू सूबों में लिया जाने लगेगा। हिन्दू सूबों में मसजिद के आगे खूब बाजे बजेंगे मन्दिर के आगे मुसलमान बाजे न बजा सकेंगे, सन्ध्यापूजा को रेलें बन्द होंगी, मुसलमानी त्यौहार की सरकारी छुट्टियाँ न होंगी, मुसलमानी पोशाक कानूनन मना कर दीजायगी उर्दू की पढ़ाई बन्द कर दी जायगी मुसलमानों को सरकारी नौकरियाँ न मिलेंगी वगैरह, बहुत से पागलपन के काम पाकिस्तान से बदला लेने के लिये किये जायँगे। इन पागलपन के कामों से न पाकिस्तान की कोई तरक्की होगी न हिन्दुस्तानकी। आज आप को देखना है कि किसी मुल्क की तरक्की ऐसी तंगदिली और मजहबी पागलपन से नहीं होती। मुसलमानी मुल्कों में तुर्किस्तान जो सब से आगे बढ़ गया है वह यह सब पागलपन छोड़कर ही आगे बढ़पाया है।

हां! एक बात आप कहसकते हैं कि पाकिस्तान बनजानेपर मुसलमान लीडर ही मुल्कके सब से बड़े लीडर होंगे। हिन्दुस्तान में मुसलमान को यह मौका नहीं मिलसकता कि वह सब से बड़ा लीडर बनसके। मैं समझता हूँ कि यही तंगदिली ही पाकिस्तान की जड़ है। भीतर ही भीतर हमारे दिलोंमें यह पाप समा गया है जिसे हम शरम के मारे कह तो नहीं सकते पर दिली मंशा यही है। हमें खटक रहा है कि गांधी ही सबसे बड़े लीडर क्यों, जिन्ना क्यों नहीं? सियासी मामलों में दूसरों के बहकाने से जो जहर हमने पीलिया है उसका नतीजा यही होसकता है।

दुनिया को देखिये और इस मुल्क को भी देखिये कोई मजहब सब से बड़ी लीडरी की राह में रोड़े नहीं अटकाता। चीनके सबसे बड़े लीडर च्यांग काई शेक ईसाई हैं जब कि उस मुल्क की ज्यादातर रियाया बुद्ध और कन्फ्यूसियस के मजहब को मानने वाली है। एक दिन हिन्द के सब से बड़े लीडर दादा भाई नौरोजी थे जो कि पारसी थे। मुट्ठीभर पारसियों का

आदमी करोड़ों हिन्दू और करोड़ों मुसलमानों को पीछे छोड़कर मुल्क का लीडर बनगया एक दिन डा. एनी बीसेन्ट इस मुल्क की सब से बड़ी लीडर थीं। तिलक और गांधी की जगह भी उनसे पीछे थी। असल बात यह है कि जो आदमी मुल्क की खिदमत में और सबसे मुहब्बतमें आगे बढ़सकता है उसका मजहब उसकी लीडरी की राह में रोड़े नहीं अटकाता भलेही उसके मजहब को मानने वाले मुल्कमें मुट्ठीभर हि क्यों न हों। आज के मौलाना आजाद वगैरह को छोड़िये पर एक दिन मुहम्मद अली शौकत अली, डा. अन्सारी वगैरह मुल्क के बड़े से बड़े लीडर थे। बम्बई का कांग्रेसहाऊस जिन्ना साहब के नामपर जिन्नाहाल कहलाता था शायद अबभी कहलाता है। तंगदिली के कारण, सस्ती लीडरी के लोभ से या विलायती दुश्मनों की चालबाजीसे हम खुद अपनी राह के रोड़े बनजायँ तो इसमें मजहब का क्या कुसूर? इसका इलाज पाकिस्तान नहीं बल्कि सब की खिदमत करना और सब से मुहब्बत करना है।

इस प्रकार पाकिस्तान किसी मर्ज की दवा तो नहीं है फिर भी मान ही लिया जाय कि पाकिस्तान चाहिये। तब सवाल यह आता है वह कैसे बनेगा कैसा बनेगा और कैसे टिकेगा। उसके बनने के तीन ही रास्ते हैं। क-डन्डे के बलपर हिन्दुओं के सिर फोड़कर, मुल्क में कलकत्ता और नोआखाली बनाकर, ख-अंग्रेजी सरकार को खुश करके, ग-हिन्दुओं के साथ राजी खुशी से समझौता करके।

क—पहिला रास्ता सब से ज्यादा गलत है। पाकिस्तान बनना तो दूर मुसलमानों पर तबाही लाना है। कलकत्ता में मुसलमान हिन्दुओं से कम नहीं मरे। नोआखाली का बदला बिहार में लिया गया। हिन्दुओं के मरने की आप पर्वाह न करें पर पाकिस्तान के लिये कलकत्ता और बिहार के हजारों बेकुसूर मुसलमानों की जानें गई उनकी रूह क्या कहती होगी। ऐसे गुनाह बेलज्जत करानेवाले लीडर मुसलमानों का कौनसा भला कर सकते हैं। गांधीजी ने अपने मरने और नेहरूजी ने खुद को कुचल डालने की धमकी न दी होती तो बिहार की नकल मुल्क में कितने

मुसलमान भाइयोंकी कुर्बानी लेंगे। इसका कुछ ठिकाना है। जब ये दंगे ही पाकिस्तान की पूरी और खुल्लम खुल्ला स्कीम बन जायँगे तब गांधी जवाहर किस मुँह से हिन्दुओं को रोक सकेंगे और रोकेंगे तो इनकी मानेगा ही कौन? इन सब बातों को देखकर खुद जिन्ना साहबको और मुसलिम लीग के लीडरों को भी कहना पड़ा है कि यह पाकिस्तानकी राह नहीं है।

ख अंग्रेजों ने खुद अपने मजहब को ताक में रखदिया हैं, वे बेमतलब मुसलमानों से खुश होकर इस मुल्कके टुकड़े क्यों करेंगे? इस-लाम से उन्हें लेना देना भी क्या है। वे जो कुछ करेंगे वह यही कि मुसलमानों को हिन्दुओं का डर दिखाकर उन्हें गुलाम बनालें और हिन्दुओं को मुसलमानों का डर दिखाकर उन्हें फन्दे में फँसालें इस तरह न पाकिस्तान बने न हिन्दुस्तान रहे, और रहे तो दोनों पर अंग्रेजों की सवारी हो। शुरु शुरु में वह ऐसा जरूर करेगा कि जिससे ज्यादा मतलब निकलता देखेगा उसपर ज्यादा मुहब्बत दिखायगा। और जब मतलब निकल जायगा तब दूसरे को पुचकारने लगेगा। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के जमाने में जो अंग्रेज ने किया था वह आज भी करेगा। खुदगर्जी के मारे कुछ लीडर इस बात को जानकर भी न समझें पर आपको समझना चाहिये। यह उम्मीद करना कि अंग्रेज़ फजूल ही हिन्दुओं से दुश्मनी करेगा और मुसलमानों से दोस्ती करेगा, हद दर्जे की कमअक्ली है। अंग्रेज सियासी मामलों में सगे बाप से भी दोस्ती नहीं करता। उसके भरोसे पाकिस्तान की उम्मीद करना हद दर्जे का शेखचिल्लीपन है।

ग—तीसरा रास्ता है हिन्दुओं की रजामन्दी से पाकिस्तान बनाना। हिन्दू पूछेगा—भाई, सैकड़ों सालों से हम सब एक साथ रहे तुम मुसल-मान बनगये तब भी साथ रहे। मुगल बादशाहत के जमाने में भी रहे, अंग्रेजी सल्तनत के जमाने में भी रहे, असहयोग जमाने में दिल्ली की जुम्मा मसजिद में हिन्दू की तकरीरें हुईं हिन्दूमहासभा के जल्से में मुस-लमान सदर बने अब आज जो जरासी खुदगर्जी के मारे पाकिस्तान अलग करना चाहते हो सो कैसे अलग होने दें। तुम्हारे पाकिस्तान में पचपन

मुसलमान होंगे तो पैंतालीस हिन्दू भी, फिर भी, सिक्ख एक जोरदार कौम है ही, तब किसके लिये पाकिस्तान बने ? पाकिस्तान बनने पर भी करोड़ों मुसलमानों को हिन्दुस्तान में रहना है और करोड़ों हिन्दुओं को पाकिस्तान में रहना हैं उन सब का क्या होगा ? यकीन न रहा तो ये कैसे रहेंगे और यकीन रहा तो पाकिस्तान की जरूरत क्या रही ? इन सब बातों का ऐसा जवाब आज तक आपकी तरफ से नहीं मिला जिससे उम्मीद की जाय कि हिन्दुओं को पाकिस्तान की बात जच जायगी ।

मानलो किसी तरह पाकिस्तान मंजूर होगया पर जमहूरियत की हत्या करके तो पाकिस्तान नहीं बन सकता । कौन कौन सूबे या जिले पाकिस्तान में जाना चाहते हैं यह तो वहां के बाशिन्दों से पूछना ही पड़ेगा, वहां के ज्यादातर बाशिन्दों की राय होगी तभी पाकिस्तान बन सकेगा । ऐसी हालत में यह तो तयशुदा है कि पंजाब के जिन जिलों में हिन्दू ज्यादा हैं वे पाकिस्तान में न जायँगे । पंजाब के तीस जिले हैं उनमें से हिसार, रोहतक, गुड़गांव, करनाल, अम्बाला, शिमला, कांगड़ा, होश्यारपुर, जालन्धर, लुधयाना, फीरोजपुर, अमृतसर, गुरुदासपुर इन तेरह जिलों में मुसलमान ज्यादा तादाद में हैं नहीं, इसलिये ये तो पाकिस्तान में जायँगे नहीं । बाकी जिलों में भी थोड़े बहुत मुसलमान ऐसे निकलेंगे जो पाकिस्तान में आकर छोटे से मुल्क के बाशिन्दे बनना मंजूर न करेंगे इस प्रकार अगर पन्द्रह बीस फीसदी मुसलमान पाकिस्तान में शामिल न हुए तो पांच छः जिले और टूट जायेंगे । तब पंजाब की एक फांक का पाकिस्तान बनकर क्या करेगा ? पठान लोग पहिले से ही कॉंग्रेसी हैं वे पाकिस्तान के खिलाफ हैं । रहा बंगाल का पाकिस्तान सो उसके भी आधे जिले २८ में से १४ में हिन्दू ही ज्यादा हैं इस प्रकार आधा बंगाल भी पाकिस्तान न बन पाया । इस प्रकार यह तीसरा रास्ता भी पाकिस्तान की कामयाबी का रास्ता न रहा ।

पाकिस्तान के बारे में और भी बहुत सी बातें हैं । पर उन सब की चर्चा करने को अब जगह नहीं है । ऊपर जो कहा गया है वही काफी है । पाकिस्तान पर, मजहब और जातिपर, इन दंगों पर आप सचाई के साथ विचार करें और फिर जरा दुनियाँ पर नजर डालें । देखें सब का भला

और मुसलमानों का भी भला किसमें है। आज हमें गरीबों को रोटी कपड़े दिलाना है, औरतों को तुर्किस्तान और रूस की औरतों की तरह तरक्की करना है, गोरे मुल्कों में और आफ्रिका वगैरह में जो हमारी तौहीन होती है उसे दूर करना है साइन्स और व्यापार हुनर में तरक्की करना है हमारे सामने सैकड़ों काम ऐसे पड़े हैं जो हमें जल्दी से जल्दी करना चाहिये। जिनके कामों को करने के लिये जिस अमनचैन और मुहब्बत के लिये खुदा दुनिया में पैगम्बर भेजता है मजहब भेजता है और अक्ल देता है हम उन्हीं कामों को छोड़कर लड़ाई झगड़ा करने, झूठी शेखी बघारने, भाई का खून बहाने, बहिन बेटियों की इज्जत आबरू बिगाड़ने, इस प्रकार इन्सान होकर भी हैवान और शैतान बनने में जिन्दगी गुजारदें इससे बढ़कर हमारी और हमारे मुल्क की बदकिस्मती और कमअक्ली क्या हो सकती है।

मैं एक बार फिर आप से कहता हूँ कि आप ठण्डे दिल से विचार करें मेरी इस लम्बी चिट्ठी में जिन जिन मुद्दों पर मैंने जो जो लिखा है उसे बार बार पढ़ें और फिर जो आपके दिल में आये आप मुझे लिखें। अगर बातें जँच जायँ तो अमल में लायें। अगर आप लीडर हैं तो सब को इसी राह में लेजायें. लीडर नहीं हैं तो लीडरों को इसी राह में चलने को कहें, वे न चलें तो उसका साथ छोड़दें, और निडर होकर अल्लाह का नाम लेकर सचाई की राह में, दुनिया की भलाई की राह में, खाकसारी और परहेजगारी की राह में मुहब्बत और इत्तफाक की राह में आगे बढ़ें! आगे बढ़ें! आगे बढ़ें!!

उम्मीद है कि मेरी यह चिट्ठी पढ़कर आप मुझे जरूर एक खत इनायत फरमायेंगे। और हर मुद्दे पर अपने दिल की बात लिखेंगे। आपका खत आपकी इजाजत के बिना जाहिर न किया जायगा।

सत्याश्रम वर्धा
२१-११-४६

—सत्यभक्त

प्रकाशक—रघुनन्दन प्रसाद विनीत, मंत्री सत्याश्रम वर्धा.
मुद्रक—गोपालराव पोहरे, मैनेजर सत्येश्वर प्रि. प्रेस वर्धा